National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 204-205

सूफी संत परम्परा एवं संगीत

डॉ0 रूचि गुप्ता

एसो0प्रो0, संगीत साहूरामस्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि ने विदेशियों को भी सदा से ही प्रभावित किया है। न केवल वे प्रभावित हुये, बल्कि उन्होंने इस आध्यात्मिक भूमि में आकर परमशान्ति का अनुभव किया। मुस्लिम आक्रमणकारियों के साथ ही भारत में सूफी संतों और आलिमों का भी प्रवेश हुआ। पैगम्बर हजरत मुहम्मद द्वारा इस्लाम धर्म प्रवर्तन के पहले से ही निस्पृह दरवेशों और फकीरों का एक वर्ग पहले से ही अस्तित्व में था, जो 'सूफी' कहलाता था। सूफीमत जिसे 'तसव्वुफ' भी कहा जाता है, एक प्रकार से ईश्वर प्राप्ति का एक साधनागत मार्ग है।

'इन्फ्लुऐंस ऑफ इस्लाम ऑन इंडियन कल्चर' में 'डा0 ताराचंद' ने इस विषय में कहा है– 'तसव्वुफ वास्तव में गहन पवित्रता, उपासना, तल्लीनता एवं आत्मसमर्पण का नाम है। मुहब्बत उसका आवेग है, काव्य संगीत–नृत्य उसकी साधना और लौकिक अवस्था से गुजरकर खुदा से मिल जाना उसका लक्ष्य है।''

सूफी मत में संगीत को विशेष महत्व दिया गया क्योंकि संगीत मन को केन्द्रित करता है, यह मन को ऊपर उठाने की शक्ति प्रदान करता है। अतः सूफी संगीत के माध्यम से साधना का अभ्यास करते हैं। 'प्रसिद्ध सूफी इनायत खाँ' ने अपनी पुस्तक 'म्यूज़िक' जो 1962 में इंग्लैंड और अमेरिका में प्रकाशित हुई थी, में स्पष्ट रूप से बताया– 'संगीत हमारे प्रियतम (परमात्मा) का स्वरूप है। संगीत सभी कलाओं से बेहतर है और धर्म से भी ऊपर है, क्योंकि वह मनुष्य की आत्मा को धर्म के बाहरी रूपों से ऊपर उठाता है। संगीत में शक्ति होने के साथ–साथ नशा भी है। प्रत्युक युग के फकीरों ने संगीत से बहुत प्रेम किया है। संगीत पूर्ण शान्ति को प्राप्त कराता है। इसलिए चिश्तिया सम्प्रदाय के सूफी लोग संगीत को अपनी साधना का स्रोत मानते हैं, जो सौन्दर्य की ऊँचाईयों तक पहुँचाकर ऐसी पूर्णता प्रदान करता है, जिसके लिये प्रत्येक आत्मा लालायित रहती है।'' फारसी भाषा के प्रसिद्ध ईरानी सूफी 'मौलाना जलालुद्दीन रूमी' ने अपने ग्रन्थ 'मसनवी–मअनवी' के प्रथम शेर (पंक्तियों) में ही रूह (आत्मा) की उपमा, जो खुदा (परमात्मा) से अलग होकर बेचैन है, 'नै' अर्थात् बाँसुरी से दी है। दूसरे शब्दों में आत्मा के अस्तित्व में संगीत भी धुला हुआ है।

इस प्रकार सूफी संत परम्परा में भाव साधना द्वारा निर्मल एवं पवित्र आत्मस्थिति को प्राप्त करने में संगीत एक सरल एवं सहज साधन माना गया है। इस्लाम की सूफी परम्परा में सूफी संगीत को इस रहस्यात्मक संसार में विचरण करने का सशक्त माध्यम माना गया। फलस्वरूप संतों और फकीरों की खानकाहों में 'सोज' और 'समा' की परम्परा विकसित हुई। 'डा0 सुमति मुटाटकर' सूफी संतों के विषय में कहती हैं– 'विद्वान दार्शनिक और वेदान्तिक सूफियों ने ही प्रथम बार भारतीय संगीत के असली तत्व और उसकी महानता को समझा था। सूफीमत स्वयं ही अगर वास्तव में देखा जाये तो हिन्दु विचारों का ही एक अनुकरण मात्र है।'' सूफी संत प्रेममार्गी थे और प्रेम की पीर संगीत से ज्यादा और कौन माध्यम व्यक्त कर सकता है? सूफी विचारधारा भारतीय वेदान्त से प्रभावित थी वहीं अनेक भारतीय भक्त व सम्प्रदाय सूफी विचारधारा से प्रभावित हुये।

भारत में सूफी विचारधारा एवं साधना पद्धति का विधिवत प्रचार 1186 ई0 में 'शेख मुइनुद्दीन चिश्ती' द्वारा प्रारम्भ हुआ। वस्तुतः चिश्ती सम्प्रदाय संगीत को आध्यात्मिक साधना का सबसे अधिक उपयुक्त साधना मानता है। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती अजमेर आकर वहाँ की लोकधुनों से बेहद प्रभावित हुये। उन्होंने अपने कव्वालों को सूफियाना कलाम को भारतीय धुनों में गाने के लिये प्रेरित किया। ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती के उत्तराधिकारी ख्वाजा कुतुबुद्दीन हुये। 'सुलोचना ब्रहस्पति जी' के अनुसार 'कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी' को भी भक्तिपरक संगीत में पर्याप्त रूचि थी। एक बार कव्वाली सुनते–सुनते वे चार दिन तक भावमग्न रहे और उसी अवस्था में इनका स्वर्गवास हो गया।''

'ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार' काकी ने दिल्ली के शासक कुतुबुद्दीन ऐबक को इतना अधिक प्रभावित किया कि उन्होंने शेख की स्मृति में दिल्ली स्थित कुतुब मीनार का निर्माण शुरू करवाया और कुतुबुद्दीन की मृत्यु के बाद इल्तुमिश ने इस मीनार को पूरा कराया। सूफी संत पूरे भारत में चिश्ती परम्परा का प्रचार करते हुये दुर्लभ किस्म का आध्यात्मिक भक्तिपूर्ण साहित्य गढ़ रहे थे और उन्हें भिन्न–भिन्न रागों में बाँधकर संगीत की सेवा भी कर रहे थे। कहने का तात्पर्य यह है कि सूफी संतों ने अपनी साधनागत संगीत परम्परा का निर्वाह करते हुये बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया। 'आचार्य ब्रहस्पति' के अनुसार 'कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी' के केन्द्रीय उत्तराधिकारी 'बाबा फरीरूद्दीन मसजऊ गंजशकर' थे। लेकिन इनका विख्यात नाम पाक पतन (पंजाब) के 'बाबा फरीद' ही है। ये स्वयं बड़े संगीतानुरागी थे।'' इन्होंने मुल्तानी, पंजाबी व हिन्दी में साहित्य रचा। शेख फरीद के प्रमुख शिष्य 'शेख निजामुद्दीन औलिया' थे। गुरू नानक देव जी भी इनकी धार्मिक और मार्मिक रचनाओं से बहुत प्रभावित हुये। बाबा फरीद की रचनाओं में से लगभग एक सौ तीस (130) श्लोक और चार पद उन्होंने अपने आदि ग्रन्थ में संग्रहीत किये थे।

निजामुद्दीन औलिया बाबा फरीद के प्रिय शिष्य थे। बाबा फरीद इनसे इतने प्रभावित थे कि बीस वर्ष की उम्र में उन्होंने इनको अपना उत्तराधिकारी बनाकर दिल्ली भेज दिया। हजरत निजामुद्दीन अरबी, फारसी के उच्चकोटि के विद्वान, बेहतरीन संगीतकार, प्रसिद्ध सूफी संत थे। आपने जिस सूफी पंथ की स्थापना की उसे 'निजामी' कहते हैं। शेख निजामुद्दीन चिश्ती संगीत के मर्मज्ञ थे। उस युग में संगीत के ज्ञान के बिना गणित का ज्ञान अपूर्ण समझा जाता था।

''मुमताज हुसैन'' का कहना है कि निजामुद्दीन चिश्ती अपने वक्त के एक बहुत बड़े आलिम थे। इनका जमाअतखाना संगीत का बहुत बड़ा मरकज़ था। शहर भर के कव्वाल इनके आस्ताने पर आते और नई से नई रागिनियों को आविष्कृत करते, शायर अपना कलाम सुनाते और 'दाद ए सुखन' पाते और जब महफिल 'समाअ; अपने शबाब पर होती तो 'सहले–हाल' रक़्स (नृत्य) भी करते। 'मुमताज हुसैन' के अनुसार आपको पूर्वी राग इस कदर पसंद था कि वे कहा करते थे कि 'मैंने खुदाई आवाज़ इस राग में सुनी और इसका मज़ा अभी तक मेरे गोशे–गोशे में है।''

शेख निजामुद्दीन औलिया के मुरीद 'अमीर खुसरो' थे। शेख निजामुद्दीन चिश्ती के अमीर खुसरो बहुत प्रिय थे वे खुसरों को 'तुर्क–अल्लाह' कहकर पुकारते थे। 'अजरत अमीर खुसरो' प्रसिद्ध सूफी मनीषी कवि, शायर, साथ ही उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। अमीर खुसरों ने जो कुछ भी रचा, लिखा उस पर सूफियाना रंग है, जिस पर उनके पीर, गुरू की गहरी छाप है। जितनी भी संगीत शैलियाँ उन्होंने आविष्कृत की या उनका परिमार्जन किया, सभी में सूफी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उनके द्वारा रचित सभी 'ख्याल' उस प्रभु या अपने गुरू निजामुद्दीन चिश्ती को समर्पित हैं। उनके कौल, कल्बाना, तराना, सोहेला, नक्श, निग़ार, बसीत सभी में सूफियाना रंग है, तसव्वुफ का स्पर्श है, प्रेम, विरह की वेदना और पीर है। अमीर खुसरो के जीवन, व्यक्तित्व, शायरी और संगीत पर हजरत निजामुद्दीन औलिया का गहरा प्रभाव था, वे उनके रंग में रंगे थे। मुरीद से अधिक वे उनकी मुराद थे।

सांई बुल्लेशाह 17वीं, 18वीं शताब्दी के विद्वान सूफी फकीर हुये हैं। आपको पंजाब का सबसे बड़ा सूफी कवि माना जाता है। इनका इस्लामी और सूफी धर्म ग्रन्थों का बड़ा गहरा अध्ययन था। पंजाबी भाषा के रस और माधुर्य में पगी आपकी रचनायें थीं। वैसे तो इनकी रचनायें 'सोहर्फी', 'अठवारा', 'बारहमासा' और 'दोहरा' आदि शैलियों में भी हैं पर आपकी 'काफियाँ' सबसे अधिक लोकप्रिय हैं, उनका कोई जबाब नहीं। इन काफियों में रागदर्शन का तत्व विद्यमान है जैसे झिंझोटी, धनाश्री जैजेवन्ती, तिलंग, हिंडोल, विभास, बिलावल, रामकली, प्रभाती आदि।

सूफी परम्परा का अनुसरण करते हुये पूरे भारत में इन सूफी संतों ने अपने अनुयायी भेजे। चाहें वह गुजरात हो या अविभाजित मुल्तान, लाहौर या दक्षिण भारत। गुजरात में 'सूफी कायमुद्दीन' ने चिश्ती परंपरा का प्रचार प्रसार किया वहीं बंगाल में कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के मुरीद 'शाह अब्दुल किरमानी' ने किया। अमीर हसन सिजज़ी, हजरत गौस ग्वालियरी, यारी साहब, मस्ता साहब, तोराब शाह, करग अली शाह, शाह बुरहानुद्दीन जानम, शेख बहाउद्दीन बाजन इनसूफी संतों की एक लम्बी श्रंखला है जो न केवल विद्वान दरवेश थे बल्कि सिद्ध संगीतज्ञ भी थे। इन सूफी संतों ने पंजाबी ब्रज भाषा में गेय साहित्य रचा और उन्हें विभिन्न राग–रागिनियों में निबद्ध किया।

जहाँ सूफी संत सूफी परम्परा का प्रचार कर रहे थे वहाँ हिन्दू वैष्णव संतों ने लोक भाषा में संगीत का सहारा लेकर भक्ति रसधारा बहाई। सूफियों ने प्रेम भक्ति की जो धारा प्रवाहित की, उसका स्थान–स्थान पर वैषणवों की रसगंगा से मिलन होता रहा। जिसके परिणाम स्वरूप एक नई संगीत परम्परा का विकास हुआ और हिन्दी, उर्दू और ब्रजभाषा का साहित्य भी समृद्ध हुआ। दोनों आध्यात्मिक साधना के परस्पर सम्पर्क में आने के फलस्वरूप सामाजिक, सांस्कृतिक सम्बन्धों में भी उदारवादी दृष्टिकोण विकसित हुआ। वैषणवों का भक्तिमार्ग और सूफियों का प्रेममार्ग दुग्ध–शर्करा की भाँति घुल मिल गया। सूफियों ने श्रीकृष्ण के अलौकिक व्यक्तित्व को जिस रहस्यमय अर्थ में लिया और बयान किया उसका प्रभाव कृष्ण भक्ति कवियों की रचनाओं पर भी पड़ा। 'डा0 माजिद असद' ने अपने शोध में यह सिद्ध कर दिया कि 'रसखान की भक्ति भावना का बाहरी स्वरूप भारतीय है किन्तु आत्मा सूफी साधना से रंजित है।'

इस प्रकार सूफी विचारधारा से ओतप्रोत सूफी संत' ने संगीत को अपनी उपासना का आधार बनाया। कारण आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो निराकार का स्पर्श कर सके, सिवाय संगीत के क्योंकि वह स्वयं भी अमूर्त है। ध्यान के लिये संगीत ही सर्वोत्तम है, मनुष्य की बुद्धि और आत्मा को प्रशिक्षित करने का सर्वोच्च साधन संगीत को माना गया है। वस्तुतः यही कारण रहा कि सूफी संतों ने इसे अपनाया क्योंकि जीवन का आनन्द मन और शरीर की सही सुरबद्धता में ही है।

सन्दर्भ

1. इस्लाम के सूफी साधक–नर्मदेश्वर चतुर्वेदी
2. सूफी मत–साधना और साहित्य– डा0 रामपूजन तिवारी
3. खुसरों, तानसेन तथा अन्य कलाकार–सुलोचना ब्रहस्पति
4. मुसलमान और भारतीय संगीत – आचार्य ब्रहस्पति
5. अमीर खुसरो देहलवी–मुमताज हुसैन
6. मुसलमान और भारतीय संगीत अंक जनवरी–2013
7. सूफी संगीत राग परम्परा के सन्दर्भ में–डा0 सुनील गोस्वामी
8. संगीत पत्रिका–